पटना सेन्ट्रल स्कूल, पटना द्वारा आयोजित 'आनन्दोत्सव–2017 में राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–02.06.2017, समय–पूर्वा॰ 11.00 बजे, स्थान–श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, गाँधी मैदान)

पटना सेन्ट्रल स्कूल के अध्यक्ष एवं धर्मोपदेशक आचार्यश्री सुदर्शन जी, उपाध्यक्ष श्री बी॰के॰ सुदर्शन जी, प्राचार्य श्री एस॰पी॰ सिंह जी, कृष्णा निकेतन की प्राचार्या श्रीमती पुष्पा सिंह जी, कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकगण, अभिभावकगण विद्यार्थीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

पटना सेन्ट्रल स्कूल का वार्षिकोत्सव जो 'आनन्दोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है, में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्न्ता हो रही है। किसी भी संस्था का वार्षिकोत्सव वह अवसर होता है, जिसके माध्यम से वह अपनी विगत प्रगति–यात्रा का मूल्यांकन करती है और अपने भविष्य के नवनिर्माण हेतु दृढ़संकल्पित होती है। यह आयोजन एक ऐसा उत्सव होता है, जिसमें हमें दोहरे आनन्द की प्राप्ति होती है। एक तो अपने अतीत की उपलब्धियों पर हमें खुश होने का मौका मिलता है, दूसरी ओर भविष्य के सपनों को साकार करने हेतु अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करने का आनन्द मिलता है। मुझे लगता है, अपनी संस्था के वार्षिकोत्सव को आनन्द–उत्सव का नाम देकर आपने एक सार्थक और प्रशंसनीय पहल की है।

आज के समारोह में आनन्द का एक और तीसरा कारण भी है, और वह यह कि आपकी संस्था के कुशल मार्गदर्शक आचार्यश्री सुदर्शन जी महाराज की पुस्तक ''गीता– जीवन जिये कैसे –गीता कहे जैसे'' का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ है। वस्तुतः श्रीमद्भागवत गीता एक ऐसा ग्रन्थ है, जो हमें ज्ञान और कर्म की अद्भुत प्रेरणा देती है। गीता का एक प्रमुख श्लोक है कि–

''कर्मण्ये वाधिकारस्ते,

मा फलेषु कदाचनः।''

—अर्थात् मनुष्य को फल की चिन्ता किये बगैर कर्म करते जाना चाहिए। प्यारे बच्चों! तुम जब कोई भी काम करते हो, तो उसका कुछ न कुछ लक्ष्य होता है। यह लक्ष्य ही वह फल होता है, जिसकी कामना हर इंसान के भीतर अनिवार्य रूप से मौजूद रहती है। गीता जब फल की चिन्ता नहीं करने की सीख देती है, तो इसका मतलब यही है कि मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाते जाना चाहिए। जो कर्मशील होते हैं, सफलता स्वतः उनके कदम चूमती है। तुम अगर अपने लक्ष्य को लेकर ही बराबर चिन्तित रहोगे, तो यह भी ठीक नहीं। लक्ष्य तो तुम्हें प्राप्त होगा हीं, अगर तुम इसके लिए मन से ठान लेते हो, दृढ़ निश्चय कर लेते हो। प्यारे बच्चों, इसे मैं एक छोटे से उदाहरण के जरिये भी स्पष्ट करना चाहता हूँ। मान लो, तुम्हें पटना से कोलकाता की यात्रा करनी है। तुम्हें इसके लिए सबसे पहले पटना जंक्शन जाना होगा और कोलकाता जानेवाली किसी ट्रेन का टिकट लेकर उसमें जाकर अपनी सीट पकड़नी होगी। और तब, तुम ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हो कि वह तुम्हें सकुशल कोलकाता पहुँचने में मदद करें। लेकिन तुम अगर दिल्ली जानेवाली राजधानी एक्सप्रेस में बैठ जाते हो, और फिर ईश्वर से प्रार्थना करते हो कि हे ईश्वर! मुझे कोलकाता पहुँचा दे, तो उल्टे तुम यात्रा के दौरान पकड़े भी जाओगे और कोलकाता पहुँच भी नहीं पाओगे। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य को फल—प्राप्ति के लिए, अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए, विवेकपूर्वक हर संभव सार्थक प्रयास करना चाहिए। ईश्वर से की गई प्रार्थना तभी फलीभूत होती है, जब मनुष्य अपनी पूरी क्षमता और योग्यता भर प्रयास करता है, कर्म करता है। गीता भी हमें इसी कर्म के प्रति सदैव तत्पर और सचेष्ट बने रहने की सीख

देती है। गीता के संदेश किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय या युगीन सीमाओं में बँधे हुए नहीं हैं। गीता केवल सिद्धांतों का संग्रह मात्र भी नही है। यह हमें व्यावहारिक जीवन के सूत्र बतलाती है। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन का निर्धारण करने वाली एक ऐसा पुस्तक है, जिसमें हमारी भारतीय संस्कृति और हमारे जीवन–दर्शन पूरी समग्रता में संचित हैं। यही कारण है कि हमारे देश में श्रीमद्भागवत गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने की कभी–कभी माँग उठती रहती है। आचार्यश्री सुदर्शन जी ने श्रीमद्भागवत गीता के अनुपम संदेशों को, सरल–सहज शब्दों में पिरोकर, आज लोकार्पित हुई पुस्तक में हम सबके समक्ष प्रस्तुत किया है। उन्होंने यद्यपि शताधिक पुस्तकों का प्रणयन किया है, किन्तु आज लोकार्पित हुई पुस्तक हमें गीता के माध्यम से जीवन जीने की अद्भुत कला सिखाती है। मैं इस सारस्वत प्रयत्न के लिए आचार्यश्री सुदर्शन जी महाराज का सादर अभिनन्दन करता हूँ और यह मंगलकामना करता हूँ कि ये ऐसे ग्रन्थों की रचना भविष्य में भी करते रहें।

प्यारे विद्यार्थियों, अब मैं आपसे सीधे तौर पर कुछ बातें करना चाहता हूँ। आप जानते हो कि भारत के एक महान संत स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में 'शून्य' पर अपना एक मौलिक और अत्यन्त गंभीर उद्बोधन दिया था। उन्होंने भी भारतीय शिक्षा के सारभूत तत्वों की चर्चा करते हुए कहा है कि –''जो शिक्षा मनुष्य को जीवन–संग्राम में उतरने में समर्थ नहीं बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस का भाव नहीं जगा सकती, उसका कोई महत्व नहीं है। वस्तुतः हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्पष्ट है, स्वामी विवेकानन्द जी एक आदर्श विद्यार्थी में स्वाभिमान, साहस, चरित्र–बल और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का समाहार आवश्यक मानते हैं।

रामायण, महाभारत, वेद–पुराण, कुरान, बाईबिल आदि सारे धार्मिक–ग्रन्थ हमें सदाचार और मानवता के पथ पर चलने की ही प्रेरणा देते हैं। आधुनिक भारत का महान ग्रन्थ ''भारतीय संविधान'' भारतीय संस्कृति और जीवन का सर्वश्रेष्ठ मर्यादा–ग्रन्थ है। हमें इसकी 'प्रस्तावना' को अपने जीवन में हृदयंगम कर लेना चाहिए। इस 'प्रस्तावना' में ही समानता, स्वतंत्रता, शांति, न्याय एवं धर्म–निरपेक्षता आदि जिन बातों का उल्लेख है, वे हमारे जीवन के नियमन के लिए बेहद जरूरी हैं। संविधान की 'प्रस्तावना' का शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल होना जरूरी है, जिस पर विद्यालयों में समय–समय पर परिचर्या हो, ताकि शिक्षा–जगत् संविधान में समाहित आदर्शों को आत्मसात कर सके।

आधुनिक युग में मौजूदा शिक्षा– व्यवस्था में पूंजी और टेक्नोलॉजी का हस्तक्षेप बढ़ा है, लेकिन सामाजिक न्याय और लोक–कल्याण के लिए निरंतर 'स्पेस' कम होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम तकनीकी और वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया के दौर में भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के प्रति सजग–सचेष्ट रहें। भारतीय संस्कृति भौतिक विकास के साथ–साथ, आध्यात्मिक विकास पर भी जोर देती है। सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की बात जब मैं करता हूँ, तो इसका सीधा मतलब यह लिया जाना चाहिए कि हमें अपनी ऐतिहासिक विरासतों, भारतीय परम्पराओं और शाश्वत मानवीय मूल्यों के प्रति पूरी तरह आस्थावान रहना है। वैज्ञानिक विकास अगर मानवीय हितों का ख्याल रखते हुए होता है, तो उसमें किसी को भी आपत्ति नही हो सकती। किन्तु, राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता की मौलिकता की रक्षा देश के नागरिकों का परम कर्त्तव्य है।

आज आपके इस प्रतिष्ठित विद्यालय के 'वार्षिक–समारोह' के सुअवसर पर मैं आप सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को हार्दिक

शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे बताया गया है कि आपके विद्यालय के कई तेजस्वी विद्यार्थी सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहकर, आपके विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आइए, हम सभी मिलकर एक सुन्दर प्रान्त और देश के नवनिर्माण का संकल्प लें। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।